KPMG

गेंदा

फूलों से समृद्धि की ओर

गेंदा की सामूहिक सहकारी खेती एवं
लालढ़ांग साधन सहकारी समिति हरिद्वार की एक नई पहल...

गेंदा: एक लाभदायी व्यावसायिक फूल

साधारण नाम
गेंदा (मैरीगोल्ड)

वानस्पतिक नाम
टैगेटिस इरेक्टिस, टैगेटिस पैट्यूला

प्रमुख प्रजातियां
टैगेटिस इरेक्टस (अफ्रीकन गेंदा), टैगेटिस पैटयूला (फ्रैंच गेंदा)

किस्म

- टैगेटिस इरेक्टस– पूसा बहार, पूसा नारंगी, पूसा बसंती, कोलकाता मेरीगोल्ड ऑरेंज, एम.डी.यू.–1, कैकर जैक, क्राउन ऑफ गोल्ड, स्पून गोल्ड आदि।
- टैगेटिस पैटयूला– पूसा दीप, अर्का हनी, अर्का परी, पूसा अर्पिता, कलर मैजिक, जेनी गोल्ड, जेनी येलो, स्टार ऑफ इंडिया, रेड ब्रोकेड, रस्टी रेड, सुजाना, वेलेंसिया आदि।
- अंतर्जातीय संकर– पूसा शंकर, पूसा शंकर–1, नगेट, रेड एंड गोल्ड रेड 1, नगेट, रेड एंड गोल्ड, रेड सेवन स्टार और शो बोट

गेंदा ऐस्टेरेसी परिवार का सदस्य है। गेंदा भारतीय संस्कृति से जुड़ा फूल है। इसका धार्मिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक महत्व है। जलवायु की विभिन्नता के अनुसार इसकी खेती मानसून, सर्दी, गर्मी तीनों मौसमों में की जाती है। इसकी खेती बेहद सरल एवं लाभदायक है। भारत में गेंदा की व्यावसायिक खेती की जाती है। कुल 342000 हैक्टेयर पर इसकी खेती हो रही है। महाराष्ट्र, कर्नाटक, गुजरात, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडू और मध्यप्रदेश मुख्य गेंदा उत्पादक राज्यों में हैं। भारत का गेंदा उत्पादन में विश्व में तीसरा स्थान है। भारतीय फूलों के बाजार का आकार लगभग 188.7 बिलियन रूपया है। एपीडा के 2019 के आंकड़ों के अनुसार भारत द्वारा 16,949.37 मीट्रिक टन फूल या उनके उत्पादों का निर्यात किया है।

गेंदा का आर्थिक महत्व

- भारत में गेंदा का आर्थिक एवं सांस्कृतिक महत्व है। गेंदा की फूलमाला त्योहारों, उत्सवों, अनुष्ठानों, सामाजिक, राजनैतिक व ऐतिहासिक उत्सवों में सजावट में प्रयोग होती है। गेंदे के फूल गुलदस्ते बनाने और मंदिरों में प्रयोग होते हैं। इसकी बढ़ती मांग ने गेंदा की व्यावसायिक खेती को बढ़ावा दिया है। बाजार में इसकी कीमत 120–150 रू. प्रति किलोग्राम तक है।
- गेंदा का फूल मामूली जलन, घाव और त्वचा रोगों में प्रयुक्त होता है। फूलों की पंखुड़ियों से हर्बल रंग बनता है। पखुंड़ियां सूप, पुडिंग, सलाद में रंग व स्वाद हेतु प्रयुक्त होती हैं। गेंदा कीड़ों को भगाने के लिए प्रयोग होता है।

- गेंदा एक प्राकृतिक खाद्य रंग और पोषण पूरक है। इसका चटक नारंगी रंग केक व पेस्ट्री आदि में सजावट के लिए प्रयोग होता है।
- अंडे में ल्यूटिन को बढ़ाने एवं अंडों में पीली जर्दी (yolk) प्राप्त करने के लिए मुर्गियों को गेंदा के फूलों का अंश चारा के तौर पर दिया जाता है।

गेंदा के फूलों की खेती कैसे करें?

- ### बुवाई

  अफ्रीकी गेंदा लगाने का सही समय फरवरी के पहले सप्ताह के बाद और जुलाई के पहले सप्ताह से पहले है। इससे उपज एवं फूलों की गुणवत्ता अच्छी होती है।

- ### मिट्टी और जलवायु

  गेंदा की खेती हेतु उचित जल निकासी वाली भूमि उपयुक्त होती है। इसके अलावा बलुई दोमट मिट्टी भी लाभकारी है। मिट्टी का पी.एच. मान 7 के आस–पास होना चाहिए। गेंदे की खेती हर जलवायु में हो सकती है। जलवायु के आधार पर साल में तीन फसलें ली जा सकती हैं। साल के विभिन्न मौसमों में फूल प्राप्त करने के लिए बुवाई और रोपाई का समय निम्नानुसार है–

फूलों का मौसम	बोने का समय	पौध रोपण का समय
वर्षा ऋतु	जून के मध्य	मध्य जुलाई
शीत ऋतु	अगस्त के मध्य	मध्य सितंबर
ग्रीष्म ऋतु	ज्नवरी–फरवरी	फरवरी–मार्च

- ### भूमि की तैयारी

  नर्सरी में गोबर की खाद ठीक से मिलाकर उसमें लिन्डेन डस्ट मिलाकर भूमि का उपचार किया जाता है। तब गेंदा के बीज खेत में डालकर उनको अच्छे से मिलाकर हल्की सिंचाई करनी चाहिए। खेत में पौधे लगाने से पहले खेत की गहरी जुताई जरूरी है। पहली जुताई के बाद गोबर की खाद मिलानी चाहिए। इसके बाद खेत में पानी लगाकर मल्चिंग करें। जब खेत में खरपतवार आ जाए तो रोटावेटर द्वारा खेत की जुताई कर उसे समतल बनाकर बीजों की रोपाई हेतु खेत की मेड़ तैयार करें।

- ### पौधों का प्रसार

  गेंदा के बीजों को सीधा खेत में लगाने के बजाय पौध लगाना बेहतर होता है। बीजों को पहले नर्सरी में रोपण करें। एक हेक्टेयर भूमि हेतु 700–800 ग्राम संकर बीज काफी होते हैं। साधारण किस्म के 1 से सवा किलो बीज ही काफी हैं। खेत में बुवाई से 1 माह पहले पौध तैयार कर लेनी चाहिए। 1 माह के पौधों को नर्सरी से उखाड़कर खेतों में लगा सकते हैं।

- ### रोपण और देखभाल

  अफ्रीकी गेंदा की बुवाई में 40 सेमी.×40 सेमी. और फ्रेंच मेरीगोल्ड में 30.×40 सेमी. दूरी रखनी चाहिए। पौधों एवं फूलों की बेहतर उपज हेतु उचित दूरी जरूरी है।

- ## खाद एवं उर्वरक

  गेंदा की अच्छी उपज हेतु उचित मात्रा में उवर्रक जरूरी हैं। 1 हेक्टेयर खेत में रोपण से पहले जुलाई शुरूआत में 40–50 टन पुरानी सड़ी गोबर की खाद मिट्टी में मिला दें। इसके अलावा खेत की आखरी जुताई के बाद 1 बोरा एन.पी.के. का छिड़काव जुताई के वक्त करें। पौध रोपाई के 1 माह बाद 20 किलो नाइट्रोजन का छिड़काव प्रति एकड़ पहले व दूसरे माह में करें।

- ## सिंचाई और खरपतवार नियंत्रण

  गेंदा के पौधों को नमी की आवश्यकता होती है, इसलिए रोपाई के तुरंत बाद पहली सिंचाई करनी चाहिए। जब तक पौधे जड़ न पकडें तब तक खेत नम रहना चाहिए। पौधों में जड़ आने के एक सप्ताह बाद पानी और शाखा बनने के दौरान आवश्यकतानुसार पानी दें पर ध्यान रहे कि जल भराव न हो। खरपतवार नियंत्रण हेतु निराई–गुड़ाई करें। पहली गुड़ाई 25 दिन बाद, दूसरी 15 दिन बाद और बाकी आवश्यकतानुसार करें। गुड़ाई के बाद पौधों की जड़ों को मिट्टी से भर दें। खरपतवार हेतु रेडोमिल या कार्बेन्डाजिम का छिड़काव रोपाई से पहले करें।

फसल सुरक्षा

- झुलसा रोग गेंदा में अल्टरनेरिया टेगेटिका तथा सरकोस्पोरा फफूंद के कारण होता है। इसके उपचार हेतु पौधों पर ब्लाइटाक्स या वेवस्टीन दवा छिड़कें।
- गलन रोग अधिक जल भराव व फफूंद के कारण पौधों में होता है। इसके लिए आक्सीक्लोराईड का छिड़काव करें।
- रेड स्पाईडर माइट एक कीट रोग है। यह गेंदा की पत्तियों को चूसता है जिससे पत्तियां धब्बेदार, बेरंग, धूलभरी हो जाती हैं। डाइकोफाल में गोंद मिलाकर उसका छिड़काव लाभकारी होता है।
- माहू (एफिड) झुंड में रहने वाला छोटा कीट है। यह पौधों से रस चूसकर उसे कमजोर बनाता है। मेलाथियान का छिड़काव इसकी रोकथाम हेतु बेहतर है।
- पाउडरी मिल्डयू नामक बीमारी ओडियम स्पसीज की फफूंदी के कारण होती है। सल्फेक्स दवा का छिड़काव इसके उपचार में उपयोगी है।
- रोंयेदार कीड़ा पत्तों को खाता है। इकाल्कस दवा का छिड़काव इसकी रोकथाम हेतु उपयोगी है।

फसल चक्रीकरण

गेंदा की फसल का चक्र दूसरी खाद्य फसलों के साथ अपनाना चाहिए जैसे गेंदा–गेंहू, आलू–गेंदा, गेंदा–सब्जी इत्यादि। इससे फसलों को उचित पोषण मिलता है। साथ ही प्रभावी कीट एवं रोग नियंत्रण होता है। साल भर गेंदा की खेती करने वाले किसान को मिट्टी के स्वास्थ्य और कीट रोग से बचाव हेतु सजग रहना चाहिए।

फसल तुड़ाई

गेंदा के फूल पौध रोपाई के 3 माह बाद तुड़ाई हेतु तैयार हो जाते हैं। तुड़ाई सुबह या शाम को करें। तुड़ाई के वक्त खेत में नमी रहे– इससे फूल देर तक ताजा रहता है। प्रत्येक 3 दिनों में इसकी तुड़ाई लगभग डेढ़ से दो महीने तक की जा सकती है।

उपज

एक फसल में उन्नत बीज का उपयोग कर गेंदा की फसल से एक बीघा में 30 क्विंटल से 40 क्विंटल तक ताजे फूलों का उत्पादन होता है। बीज उत्पादन हेतु किसान फूलों को खेत में ही सूखने देता है। सूखने पर फूलों की तुड़ाई करने से पका बीज मिलता है। एक एकड़ से 35 से 40 किलो बीज का उत्पादन होता है।

उत्तराखंड में गेंदा की खेती

उत्तराखंड की भौगोलिक विशेषताएं एवं जलवायु फूलों की खेती के लिए बहुत उपयुक्त है। गेंदा उन फूलों में प्रमुख है। उत्तराखंड बागवानी विभाग के अनुसार राज्य में विभिन्न प्रकार के फूलों की खेती का कुल क्षेत्रफल 1335.36 हेक्टेयर है, जिसमें से 730.59 हेक्टेयर (लगभग 55%) क्षेत्र में गेंदा का कुल उत्पादन 1499 मीट्रिक टन होता है। उत्तराखंड एक सांस्कृतिक रूप से समृद्ध राज्य है। इस कारण साल भर स्थानीय बाजारों में फूल की मांग बनी रहती है। हरिद्धार कुंभ में करोड़ों श्रृद्वालुओं के आने से फूलों की मांग बहुत ज्यादा बढ़ती है। उत्तराखंड से फूलों की आपूर्ति दिल्ली की गाजीपुर मंडी, राजस्थान के जयपुर के बाजारों और उत्तरप्रदेश के लखनऊ, सीतापुर, मुरादाबाद और सहारनपुर में की जाती है। राज्य दिल्ली के बाजारों में 8–10% फूलों का योगदान देता है।

उत्तराखंड राज्य की कृषि क्षेत्र में की गई प्रमुख पहलों में एम.पैक्स का गठन और उनके माध्यम से विभिन्न तरह की कृषि संबधी गतिविधियों अथवा स्थानीय बिजनेस मॉडल शुरू कर उसे व्यावसायिक रूप देना है। इस क्रम में हरिद्धार जिले की लालढांग साधन सहकारी समिति ने गेंदा की सामूहिक सहकारी खेती कर उसको बाजार तक पहुंचाने की योजना बनाई है।

UKCDP में गेंदा की सामूहिक सहकारी खेती

उत्तराखंड सहकारिता विभाग UKCDP के अन्तर्गत सहकारी समितियों के माध्यम से राज्य के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। परियोजना में सहकारी समितियों के माध्यम से कृषि और सहवर्ती क्षेत्रों में समग्र विकास हेतु कई तरह की योजनाओं पर काम किया जा रहा है। एक पायलट परियोजना के अन्तर्गत लालढ़ांग सहकारी समिति को गेंदा के फूलों की सामूहिक सहकारी खेती करने हेतु प्रोत्साहित कर उसकी मार्केटिंग की जायेगी। वर्तमान में UKCDP के अर्न्तगत लैमनग्रास एवं पुदीने की सामूहिक सहकारी खेती को प्रोत्साहित किया जा रहा है। इस समिति में 19 गांवों में 1693 किसान हैं। इनमें से 377 सक्रिय सदस्य हैं। समिति का सदस्यता शुल्क कुल 11.44 लाख रूपया है। समिति के तहत 17700 परिवार और 88500 की जनसंख्या है। अभी तक लालढांग सहकारी समिति किसानों को ऋण उपलब्ध कराने, ग्रामीण बचत केन्द्र, कृषि इनपुट बिक्री और स्थानीय खरीद फरोख्त काम में सक्रिय रही है। परियोजना के अन्तर्गत सहकारी समिति की कृषि संबधी व्यावसायिक गतिविधियों के विस्तार हेतु समिति के बोर्ड द्वारा स्थानीय उपज गेंदा के फूलों की सामूहिक सहकारी खेती को बढ़ावा देने का निर्णय लेकर उसकी मार्केटिंग करने की योजना पर काम किया जा रहा है।

उत्तराखंड में कृषि क्षेत्र में दुर्गमता, कम उपज, सिंचाई की व्यवस्था न होना, उत्पादन प्रबंधन की कठिनाइयां, मजदूरों की कमी, विपणन, नेटवर्क और उद्यमिता की कमी जैसी कई मुख्य बाधाएं हैं। लालढांग क्षेत्र में इनके साथ ही हाथी समेत दूसरे जंगली जानवरों का खतरा, विपणन के लिए स्थानीय बड़े बाजारों का न होना, किसानों के पास फार्म मशीनरी की सुविधा न होना, कीटनाशकों, उर्वरकों, जैव उर्वरकों के उपयोग, मिट्टी की जांच के बारे में जागरूकता का अभाव और मजदूरी की मंहगी दरें जैसी अतिरिक्त चुनौतियां भी किसानों की परेशानी का कारण हैं।

गेंदा के फूलों की सामूहिक सहकारी खेती एवं मार्केटिंग

UKCDP लालढांग सहकारी समिति के साथ कई तरह की फसलों की सामूहिक सहकारी खेती हेतु प्रयासरत है। यहां पर ज्यादातर सीमांत व छोटे किसान हैं, जिनकी औसत जोत 5 एकड़ से कम है। क्षेत्र की मुख्य फसलें धान, गेहूं, गन्ना और सरसों है। गैंडीखाता क्लस्टर में पायलट प्रोजेक्ट के रूप में लैमनग्रास व पुदीने की खेती की जा रही है। इसमें होने वाले फायदों को देखकर किसान नई कृषि पद्वतियां अपनाने को इच्छुक हैं। इस क्रम में गेंदा के फूलों की खेती किसानों हेतु एक नई उम्मीद लेकर आई है। इस समिति में गेंदा की सामूहिक खेती चरणवार की जायेगी। इसकी शुरूआत 50 बीघा में पायलट प्रोजेक्ट के तौर पर होगी। अगले चरणों में खेती के क्षेत्रफल में वृद्धि करके 100 बीघा तक उसका विस्तार किया जायेगा। एम.पैक्स का लक्ष्य गेंदा की फसल की उत्पादकता में सुधार कर इसकी मार्केटिंग से उचित मूल्य अर्जित करना है। इस फसल की समयबद्ध खेती एवं मार्केटिंग द्वारा यह एक लाभकारी व्यवसाय हो सकता है। यहां का किसान गेंदा उत्पादन हेतु इच्छुक है।

गेंदा उत्पादन की क्रियान्वयन योजना

- लालढांग एम.पैक्स की अगले 10 सालों में 100 एकड़ जमीन पर गेंदा की खेती की विस्तार की योजना है। इसके अन्तर्गत जाफरी वैरायटी एवं कलकत्ता वैरायटी के गेंदा की किस्मों की खेती की जायेगी।
- जाफरी वैरायटी फ्रेंच मेरीगोल्ड की प्रजाति है। यह फरवरी मार्च में इसकी नर्सरी तैयार कर अगले महीने खेतों में रोपी जाती है। कलकत्ता वैरायटी अफ्रीकन मेरीगोल्ड की प्रजाति है। जून–जुलाई में इसकी नर्सरी तैयार कर अगले महीने उसे खेतों में रोपा जाता है।
- इसका प्रति बीघा औसत उत्पादन एक सीजन में 15 एवं 30 क्विंटल क्रमशः कलकत्ता एवं जाफरी किस्म में होता है।
- सहकारी समिति ने अपने क्षेत्र में 100 एकड़ में चरणवार खेती करने की विस्तृत योजना बनाई है।

गेंदा की सामूहिक खेती एवं मार्केटिंग योजना के मुख्य बिंदु

- सामूहिक खेती हेतु भूमिधर किसानों का ही चयन किया गया है। जिनके पास भूमि नहीं है, उन किसानों को 11 साल की लीज पर भूमि लेनी होगी।
- समिति व चयनित किसानों के बीच एक एग्रीमेंट होगा। एग्रीमेंट के मुताबिक समिति किसानों को तकनीकी सहायता, आसवन सुविधा, रोपण सामग्री आदि उचित मूल्य पर देना सुनिश्चित करवाएगी। किसान अपनी फसल की बिक्री सहकारी समिति के माध्यम से ही कराएंगे।

- उद्यान विभाग बीज व अन्य तकनीकी सहायता उपलब्ध कराएगा।
- एम. पैक्स गेंदा के फूलों को जमा करने और परिवहन की व्यवस्था करके उसके विपणन में मदद देंगे। उत्पादन कलस्टर के नजदीक ही एक केंद्रीय जगह पर संग्रह केंद्र स्थापित किये जायेंगे। यहां पर किसानों द्वारा लाये फूलों के माप तौल की व्यवस्था होगी। इस केंद्र से बाजार में विपणन हेतु फसल को ले जाया जायेगा। पहले साल में एक संग्रह केंद्र श्यामपुर में स्थापित किया जायेगा। फूल की तुड़ाई के बाद किसान फसल को श्यामपुर केंद्र तक लाऐंगे। एम. पैक्स द्वारा किसानों से फूलों के एकत्रीकरण एवं भुगतान हेतु प्रपत्र एवं विस्तृत कार्ययोजना तय की गई है।
- संग्रह केंद्र के कार्यों के संपादन हेतु एक सुपरवाईजर रखा जायेगा। यह फूलों के संग्रह, किसानवार आंकड़े रखने एवं विपणन में मदद करेंगे। सुपरवाईजर एवं माल ढुलाई के लिए सीजन में मजदूरों के खर्च का वहन एम.पैक्स द्वारा किया जायेगा।
- संग्रहित फूलों का विपणन एवं परिवहन व्यवस्था एम.पैक्स द्वारा की जोयगी। मूल्य का निर्धारण बाजार मूल्य के आधार पर होगा और उसी के अनुसार किसानों को भुगतान किया जायेगा।
- समिति के माध्यम से फूलों की बिक्री कर बाजार के दैनिक मूल्य के हिसाब से किसानों से विपणन शुल्क लिया जायेगा।
- किसान तुड़ाई के मौसम में बिक्री मूल्य का न्यूनतम 10 प्रतिशत समिति को विपणन शुल्क के तौर पर देंगे। बाजार के उतार–चढ़ाव को देखते हुए समिति के बोर्ड के सदस्य इस प्रतिशत में आपसी सहमति से बदलाव कर सकते हैं।
- समिति राज्य, जिला सैक्टर की योजनाओं द्वारा किसानों को बीज अथवा अन्य कृषि इनपुट में सब्सिडी उपलब्ध करवाकर खेती की लागत कम कर लाभ में बढ़ोतरी के लिए प्रयास करेगी।
- किसानों के प्रोत्साहन के लिए दो योजनाएं लागू की जायेंगी–पहली कृषि इनपुट जैसे बीज, खाद, कीटनाशक की खरीद हेतु ऋण व्यवस्था। इसके अन्तर्गत एम.पैक्स अपने स्तर से किसानों को ऋण उपलब्ध करवाएंगे जिसका समायोजन फूलों की बिक्री के बाद एम.पैक्स द्वारा किसानों को दी जाने वाली राशि में से किया जायेगा। दूसरी योजना के तहत गेंदे की उपज बढ़ोतरी के लिए प्रोत्साहन योजना। यह पूरे सीजन के अंत में दी जाने वाली इंसेटिव योजना है। इसके अन्तर्गत किसानों को एक प्रोत्साहन राशि दी जायेगी, यदि किसान औसत से अधिक उपज उगाकर एम. पैक्स के माध्यम से फूलों की बिक्री करते हैं। इसकी औसत उपज लगभग 30 क्विंटल होती है।

भूमिका और जिम्मेदारियां

- इस बिजनेस मॉडल एवं पूरी प्रक्रिया में किसान अहम भूमिका में होंगे। खेती की जिम्मेदारी, श्रम एवं खर्च आदि किसान वहन करेंगे। फूलों की तुड़ाई कर उनको शाम तक केन्द्र तक पहुंचाने का काम किसान करेंगे।
- एम. पैक्स गुणवत्तापूर्ण रोपण सामग्री प्राप्त करने में किसानों को मदद करेंगे। पौध का खर्च किसान वहन करेंगे। एम. पैक्स समय–समय पर तकनीकी संस्थान के सहयोग से नए किसानों को प्रशिक्षण एवं पुराने किसानों की रिफ्रेशर ट्रेनिंग दिलाएंगे।
- एम. पैक्स किसानों की सुविधा एवं आय बढ़ाने हेतु संग्रह केंद्र की स्थापना, परिवहन की सुविधा एवं बाजार उपलब्ध करवाकर उचित मूल्य सुनिश्चित करवाऐंगे।

- एम. पैक्स किसानों को जिला एवं राज्य स्तर की सब्सिडी उपलब्ध करवाकर किसानों को खेती की लागत को कम कर लाभ बढ़ोतरी में सहायक होंगे।
- परियोजना के सफल संचालन हेतु सभी हितधारकों यथा सहकारी समिति के बोर्ड सदस्य, अनुश्रवण समिति के सदस्यों, सहकारी समिति सचिव, जिला नोडल अधिकारी, जिला सहायक निबंधक ए.डी.ओ. सहकारिता, UKCDP और कार्यक्रम निदेशालय सभी की जिम्मेदारियां कार्यक्रम निदेशालय स्तर पर तय की गई हैं।
- गेंदा की सामूहिक खेती हेतु परियोजना द्वारा किसानों हेतु खेती का ''एक बीघा मॉडल'' तैयार किया गया है। इसमें कोलकाता वैरायटी का 15 क्विंटल प्रति बीघा और जाफरी वैरायटी का 30 क्विंटल प्रति बीघा प्रति सीजन उगाने का लक्ष्य है। फसल की तुड़ाई 20 दिन प्रति सीजन होगी। बाजार में फूलों की अनुमानित बिक्री दर कोलकाता वैरायटी हेतु 40 से 150 रू. प्रति किग्रा. और जाफरी वैरायटी की 10 रू. प्रति किग्रा. से 60 रू. प्रति किग्रा. रहती है। यहां उल्लेखनीय है कि ज्यादातर किसान खेती स्वयं करके खेती में लगने वाली श्रम लागत को बचा लेते हैं। यदि ऐसा होता है तो किसानों का लाभ विश्लेषित संभावित लाभ से ज्यादा हो सकता है।
- यदि एक किसान एक मौसम में 1 बीघा में जाफरी गेंदा लगाता है तो 5 वर्षीय कुल लागत एवं लाभ विश्लेषण के अनुसार प्रति बीघा खेती का शुद्ध लाभ 5 सालों में लगभग 39,250 रू. होगा। प्रति बीघा फूल का उत्पादन लगभग 3000 किग्रा प्रति वर्ष होगा।
- यदि एक किसान 1 बीघा में एक मौसम में कोलकाता गेंदा 1 बीघा में लगाता है तो तय गणना के अनुसार 5 सालों में किसानों को 219250 रू. का शुद्ध लाभ होगा। साथ ही प्रति बीघा फूल उत्पादन 1500 किग्रा प्रति वर्ष होगा। प्रति बीघा किसान को कुल आय 90,000 रू. प्रति वर्ष प्राप्त होगी। यदि किसान एवं उनका परिवार खुद खेती करते हैं तो लाभ में बढ़ोतरी हो सकती है।
- यदि किसान 2 मौसम में जाफरी गेंदा एवं कोलकाता गेंदा 01 बीघा में लगाता है तो तय लाभ–लागत विश्लेषण के अनुसार 5 सालों में किसानों को 258,500 का शुद्ध लाभ होगा। साथ ही प्रति बीघा 4,500 किग्रा. प्रति वर्ष फूल उत्पादन होगा।
- परियोजना के अन्तर्गत 100 एकड़ में खेती के लिए प्रतिवर्ष एम.पैक्स को लगभग 5–10 लाख रू. की कार्यशील पूंजी की जरूरत होगी। भविष्य में यदि एम.पैक्स को पैसे की जरूरत होगी तो वह परियोजना निदेशालय से गेंदा उत्पादन हेतु आवश्यक धनराशि की मांग कर सकते हैं।
- इस योजना से एम.पैक्स को अर्जित होने वाले अनुमानित लाभ की गणनानुसार यदि पैदावार 100 प्रतिशत आती है तो 10 साल में एम. पैक्स का शुद्व लाभ 616 लाख होने की संभावना है। यदि पैदावार 80 प्रतिशत होगी तो शुद्ध लाभ 10 सालों में 482 लाख और यदि पैदावार 60 प्रतिशत तक आती है, तो एम. पैक्स का शुद्ध लाभ 10 सालों में 348 लाख रू. तक होने की संभावना है।

परियोजना का संभावित प्रभाव

- किसान बंजर भूमि का उपयोग कर गेंदे की खेती करके अतिरिक्त आय अर्जित कर सकते हैं।
- गेंदा की खेती एवं मार्केटिंग से किसानों की आसानी से बाजार तक पहुंच बनेगी।
- यह पहल जाफरी एवं कोलकाता गेंदा वैरायटी को व्यापक पैमाने पर बाजार में पहुंचाएगी।
- गेंदा की खेती एवं मार्केटिंग से किसानों को लाभ मिलेगा और समिति की अलग पहचान बनेगी।
- यह पहल गैंडीखाता कलस्टर में सामूहिक सहकारी प्रयासों द्वारा व्यावसायिक खेती में मदद करेगी।
- गेंदा की सुगंध से हाथी समेत अन्य जंगली जानवरों को खेतों से दूर रखती है।

ज्यादातर पूछे जाने वाले संभावित प्रश्न

1. इस योजना के लाभार्थी कौन–कौन और कैसे हो सकते हैं?

उ0. सहकारी समिति से जुड़े सदस्य इस योजना का लाभ उठा सकते हैं। यदि कोई किसान समिति का सदस्य नहीं है, और इस योजना का लाभ लेना चाहता है तो वह समिति में सदस्यता प्राप्त कर इससे जुड़ सकता है। इच्छुक किसान समिति द्वारा प्रस्तावित अनुबंध में अंकित नियम एवं शर्तों पर सहमति प्रदान कर योजना का लाभ ले सकते हैं।

2. किसान खेती के लिए बीज कहां से प्राप्त कर सकते हैं?

उ0. सहकारी समिति किसानों को बीज प्राप्त करने में सहायता करेगी। जिले में उद्यान विभाग तथा अन्य विभागीय योजनाओं के तहत बीज या पौध को उपलब्धता होती है। समिति इन योजनाओं के माध्यम से भी बीज उपलब्ध कराने के लिए प्रयासरत होगा।

3. किसान कृषि इनपुट कहां से खरीद सकते हैं?

उ0. मांग के आधार पर सोसाईटी कृषि इनपुट की खरीद करेगी एवं किसानों को बेचेगी।

4. गेंदा फसल की खरीद कौन करेगा?

उ0. फसल की खरीद सहकारी समिति करेगी। किसान अपनी फसल को समिति के नजदीकी संग्रह केंद्र में बेच सकते हैं।

5. यदि किसान के पास स्वयं की जमीन नहीं है एवं वह इस योजना से जुड़ना चाहते हैं तो क्या प्रावधान होगा?

उ0. किसान लीज पर भूमि लेकर एवं सहकारी समिति को 11 साल का लीज अनुबंध प्रस्तुत कर योजना का लाभ उठा सकते हैं।

6. क्या किसान क्रेडिट पर कृषि इनपुट इस योजना के तहत ले सकता है?

उ0. यदि किसान को बीज एवं अन्य इनपुट की खरीद के लिए पैसे की आवश्यकता है तो वह समिति से क्रेडिट पर खरीद कर सकते हैं। इसका समायोजन किसान को बिक्री के पश्चात किए जाने वाले भुगतान में से किया जायेगा।

7. इस योजना की अधिक जानकारी के लिए किससे संपर्क करें?

अधिक जानकारी के लिए सहकारी समिति के सचिव या ए.डी.ओ. (एरिया डवलपमेंट ऑफिसर) से संपर्क किया जा सकता है।